अध्याय

02

# राम लक्ष्मण परशुराम संवाद

© NCERT not to be republished

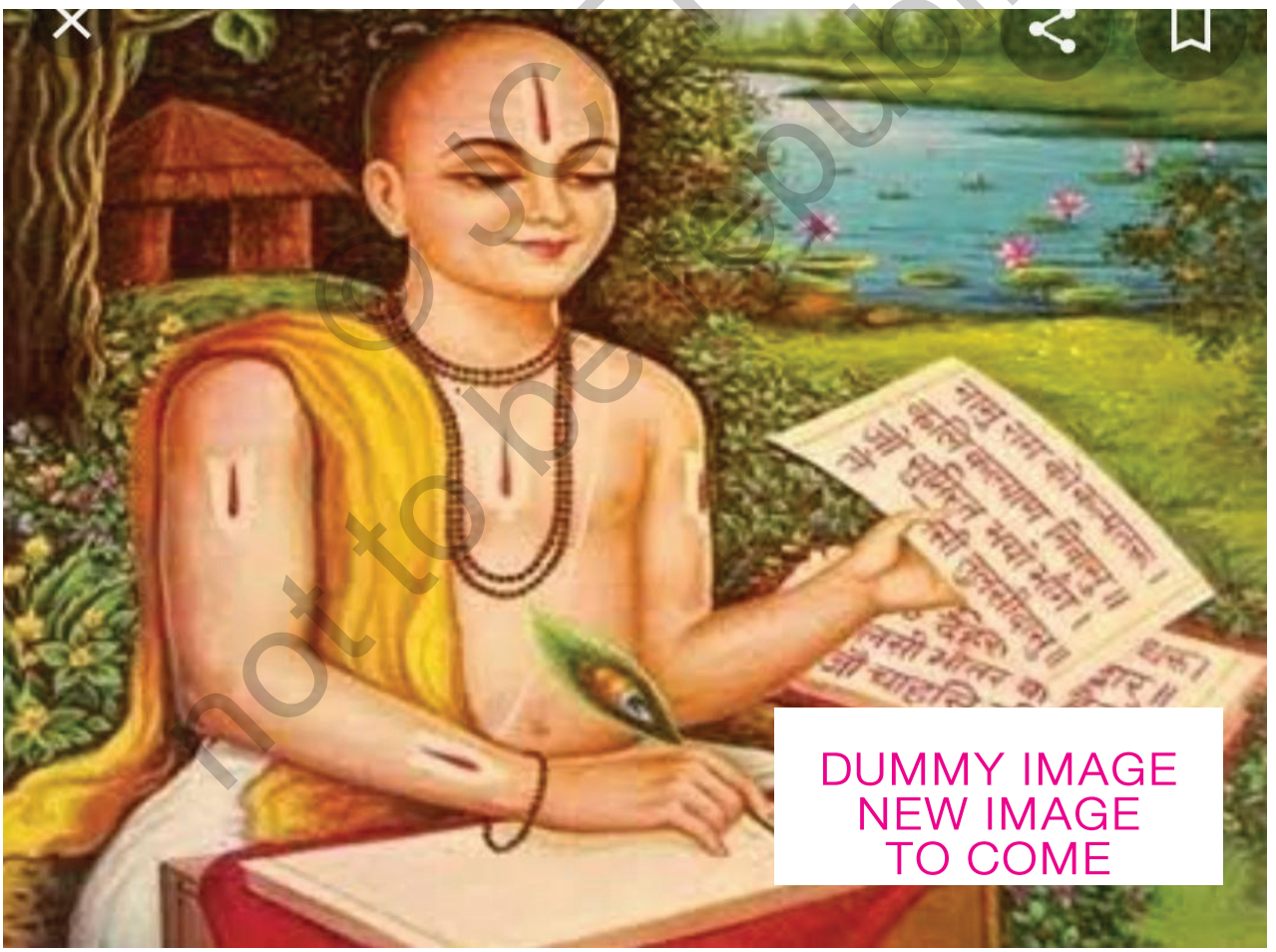


## तुलसीदास

# कवि – तुलसीदास

## जीवन –परिचय

1. **जन्म –1532 बांदा जिला राजापुर गाँव (वर्तमान में चित्रकूट) उत्तर प्रदेश।**
2. **निधन – 1623 काशी ( उत्तर प्रदेश)**
3. **पिता – आत्माराम दुबे**
4. **माता – हुलसी देवी**
5. **पत्नी – रत्नावली**
6. **गुरु – नरहरी दास**
7. **बचपन का नाम – राम बोला**
8. **भक्ति कालीन काव्य धारा के कवि।**
9. **प्रसिद्धि का आधार रामचरितमानस**
10. **अवधी एवं ब्रजभाषा पर समान अधिकार।**

    **रामचरित्र मानस (सर्वश्रेष्ठ रचना)**

11. प्रमुखरचनाएँ-**गीतावली**(1571),**कृष्ण-गीतावली** (1571), **रामचरितमानस** (1574), **पार्वती-मंगल** (1582), **विनय-पत्रिका** (1582), **जानकी-मंगल** (1582), **रामललानहछू** (1582), **दोहावली** (1583),वैराग्यसंदीपनी (1612), **रामाज्ञाप्रश्न** (1612), **सतसई, बरवै रामायण** (1612), **कवितावली** (1612), **हनुमान बाहुक।**

निधन सन् 16 23 ई. में कासी (उ.प्र.) में हुआ।

## साहित्यिक परिचय

1. तुलसीदास सगुण भक्ति, राम मार्गी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। तुलसी की भक्ति आडंबर से रहित है और दास्यभाव की है।
2. तुलसी के राम मानवीय मर्यादाओं और आदर्श के प्रतीक हैं उन्होंने राम के माध्यम से नीति, स्नेह, शील, विनय और त्याग जैसे आदर्शों को प्रतिष्ठित किया है।
3. 'रामचरितमानस' की रचना अवधि में तथा 'विनयपत्रिका' एवं 'कवितावली'की रचना ब्रज भाषा में की है। संस्कृत में भी समान अधिकार रखते हैं।
4. रामचरित्रमानस का मुख्य छंद चौपाई है तथा बीच-बीच में दोहे, सोरठे,हरिगीतिका तथा आनंद अन्य छंद पिरोए गए हैं।
5. विनय पत्रिका की रचना गेय पदों में हुई है।
6. कवितावली में सवैया और कवित छंद की छटा देखी जा सकती है।
7. उनकी रचनाओं में प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यो का उत्कृष्ट रूप है। उन्होंने अधिकांश कृतियों में श्री राम के अनुपम गुणों का गान किया है।
8. अपने समग्र ग्रंथों की रचना **स्वांत: सुखाय** के लिए किया है अर्थात अपने अंतःकरण के सुख के लिए की है।

© JCERT not to be republished

डॉ० हजारीप्रसाद दिवेदी जी के शब्दों में -

"तुलसीदास कवि थे, भक्त थे, पण्डित थे, सुधारक थे, लोकनायक और भविष्य के स्रष्टा थे। इन रूपों में उनका कोई भी रुप किसी से घटकर नहीं है।"

## पाठ- परिचय

1. प्रस्तुत पाठ तुलसीदास जी के महाकाव्य

   'रामचरितमानस' के बालकाण्ड का अंश है।

2. सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिव - धनुष तोड़े जाने के बाद परशुराम अत्यधिक क्रोधित हो जाते हैं।

4. राम के विनय और विश्वामित्र के समझाने पर तथा राम की शक्ति की परीक्षा लेकर अंततः उनका गुस्सा शांत होता है इस बीच राम, लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो संवाद हुआ; उस प्रसंग को यहां प्रस्तुत किया गया है।

5. इस प्रसंग की विशेषता है लक्ष्मण की वीर रस से पगी व्यंग्य-युक्तियां और व्यंजना शैली की सरस अभिव्यक्ति।

## काव्यांश-1

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥

आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥

सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई॥

सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥

सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥

सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने॥

बहु धनुही तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस किन्हि गोसाईं॥

**राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद**

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउएक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिबधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाई समाज। न त मारे जैहहिं सब राजा।।
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने।।
बहु धनुही तोरी लरिकाई। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाई।।
येहि धनु पर ममता केहि हेतूफ सुनि रिसाई कह भृगुकुलकेतू।।
रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार।।

© JCERT not to be republished

येही धनु पर ममता केहि हेतू। सुनी रिसाइ कह भृगु- कुलकेतु

रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न संभार

धनुही सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार॥

**शब्दार्थ -**

| | |
|---|---|
| शंभू-धनु - | शिव का धनुष, |
| भंजनिहारा- | भंग करने वाला / तोड़ने वाला, |
| आयेसू- | आज्ञा, |
| काह- | क्या, |
| होइहि— | ही होगा, |
| केउ— | कोई, |
| आयेसु — | आज्ञा |
| काह— | क्या, |
| कहिअ — | कहते, |
| किन — | क्यों नहीं, |
| मोही— | मुझे, |
| रिसाइ— | क्रोध करना, |
| कोही — | क्रोधी, |
| अरिकरनी — | शत्रु का काम, |
| लराई— | लड़ाई, |
| जेहि — | जिसने, |
| तोरा— | तोड़ा, |
| सहसबाहु— | सहस्त्रबाहु, हजार भुजाओं वाला |
| सम— | समान, |
| सो — | वह, |
| रिपु — | शत्रु, |
| बिलगाउ — | अलग होना, |
| बिहाइ — | छोड़कर, |
| जैहहिं— | जाएँगे, |
| अवमाने — | अपमान करना, |
| लरिकाईं— | बचपन में, |
| कबहुँ - | कभी, |
| असि — | ऐसा, |
| रिस — | क्रोध, |
| गोसाईं — | स्वामी / महाराज, |
| येहि— | इस, |
| भृगुकुलकेतू — | भृगुकुल की पताका अर्थात् परशुराम, |
| नृपबालक— | राजपुत्र / राजा का बेटा, |
| त्रिपुरारि — | शिव जी, |
| बिदित — | जानता है |
| सकल — | सारा |

**प्रसंग**–प्रस्तुत चौपाई की पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक क्षितिज भाग–2 में संकलित 'राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद' से उद्धृत है, जिनके कवि महाकवि तुलसीदास हैं।

इस काव्यांश में तुलसीदास जी ने उस घटना का वर्णन किया है जहाँ श्री राम के द्वारा शिव धनुष को तोड़ देने पर परशुराम जी इतने क्रोधित हो जाते हैं कि धनुष तोड़ने वाले को

© JCERT not to be republished

अपना शत्रु तक मान लेते हैं। परशुराम जी को इतना अधिक क्रोध करता देख कर अनजाने में ही लक्ष्मण जी उनका उपहास करने लगते हैं। जिस पर परशुराम जी और अधिक क्रोधित हो जाते हैं।

**व्याख्या-** परशुराम को क्रोधित देखकर राम कहते हैं कि हे नाथ! जिसने शिव का धनुष तोड़ा होगा वह आपका ही कोई सेवक होगा। इसलिए आप क्यों आये हैं यह मुझे बताइए। इस पर क्रोधित होकर परशुराम कहते हैं कि सेवक तो वो होता है जो सेवा करे, इस धनुष तोड़ने वाले ने तो मेरे दुश्मन जैसा काम किया है और मुझे युद्ध करने के लिए ललकारा है।

कहते हैं- हे राम! जिसने भी इस शिवधनुष को तोड़ा है वह वैसे ही मेरा दुश्मन है जैसे कि सहस्त्रबाहु हुआ करता था। अच्छा होगा कि वह व्यक्ति इस सभा से अलग होकर खड़ा हो जाए नहीं तो यहाँ बैठे सारे राजा मेरे हाथों मारे जाएँगे। यह सुनकर लक्ष्मण मुसकराने लगे और परशुराम का मजाक उड़ाते हुए बोले कि मैंने तो बचपन में खेल -खेल में ऐसे बहुत से धनुष तोड़े थे लेकिन तब तो किसी भी ऋषि मुनि को इसपर गुस्सा नहीं आया था। इसपर परशुराम जवाब देते हैं कि अरे राजकुमार! तुम अपना मुँह संभाल कर क्यों नहीं बोलते, लगता है तुम्हारे ऊपर काल सवार है। वह धनुष कोई मामूली धनुष नहीं था बल्कि वह शिव का धनुष था जिसके बारे में सारा संसार जानता था।

**विशेष-**

लक्ष्मण परशुराम संवाद' की भाषा अवधि है। शब्द चयन सटीक है। दोहा- चौपाई छंद में गेयता मौजूद है। अनुप्रास और उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है

## काव्यांश-2

लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना॥

का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।

छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू॥ बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा॥

बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।

बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही॥

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही॥

सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥

मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।

गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर

**शब्दार्थ**

| | |
|---|---|
| हमरे- | मेरे, |
| सुनहु- | सुनो, |
| छति - | क्षति / नुकसान |
| जून - | पुराना, |

© JCERT not to be republished

तोरें - तोड़ने में,

भोरें - धोखे में

छुअत टूट- छूते ही टूट गया,

रघुपतिहु - राम का

दोसू - दोष / गलती,

बिनु - बिना,

काज - कारण

रोसु - क्रोध,

चितै - देखकर,

परसु - फरसा

सठ - दुष्ट,

सुनेहि - सुना है,

सुभाउ - स्वभाव

बधौं - वध करता हूँ,

तोही - तुझे

अति कोही - बहुत अधिक क्रोधित

बिस्वबिदित - दुनिया में प्रसिद्ध

द्रोही - घोर क्षत्रु,

भुजबल - भुजाओं के बल से

कीन्ही - कई बार,

भूप - राजा,

बिपुल - बहुत

महिदेवन्ह- ब्राह्मणों को,

छेदनिहारा - काट डाला

बिलोकु - देखकर,

महीपकुमारा - राजकुमार

गर्भन्ह - गर्भ के,

अर्भक - बच्चा,

दलन - कुचलने वाला,

अति घोर - अत्यधिक भयंकर

**प्रसंग-**प्रस्तुत चौपाई की पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक क्षितिज भाग–2 में संकलित 'राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद' से उद्धृत है, जिनके कवि महाकवि तुलसीदास हैं।

इस काव्यांश में तुलसीदास वर्णन कर रहे हैं कि जब परशुराम जी को अत्यधिक क्रोध करता देख लक्ष्मण जी उनका और ज्यादा मजाक बनाने लगते हैं जिस कारण परशुराम जी इतने अधिक क्रोधित हो जाते हैं कि वे अपना परिचय अत्यधिक क्रोधी स्वभाव वाले व्यक्ति के रूप में देते हैं और बताते हैं कि वे पूरे विश्व में क्षत्रिय कुल के घोर शत्रु के रूप में प्रसिद्ध हैं।

**व्याख्या-** परशुराम जी का शिव धनुष की ओर इतना प्रेम देख कर और उसके टूट जाने पर अत्यधिक क्रोधित होता हुआ देख कर लक्ष्मण जी हँसकर परशुराम जी से बोले कि हे देव! सुनिए, मेरी समझ के अनुसार तो सभी धनुष एक समान ही होते हैं।

लक्ष्मण श्रीराम की ओर देखकर बोले कि इस धनुष के टूटने से क्या लाभ है तथा क्या हानि, यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। श्री राम जी ने तो इसे केवल छुआ था, लेकिन

© JCERT not to be republished

यह धनुष तो छूते ही टूट गया। फिर इसमें श्री राम जी का क्या दोष है ? मुनिवर! आप तो बिना किसी कारण के क्रोध कर रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि लक्ष्मण जी परशुराम जी के क्रोध को बेमतलब का मान रहे थे क्योंकि उन्हें नहीं पता था कि उस धनुष के साथ परशुराम जी के क्या भाव जुड़े थे।

लक्ष्मण जी की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर परशुराम जी का क्रोध और बढ़ गया और वह अपने फरसे की ओर देखकर बोले कि अरे दुष्ट! क्या तूने मेरे स्वभाव के विषय में नहीं सुना है ? मैं केवल बालक समझकर तुम्हारा वध नहीं कर रहा हूँ। अरे मूर्ख! क्या तू मुझे केवल एक मुनि समझता है ? मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति हूँ।मैं पूरे विश्व में क्षत्रिय कुल के घोर शत्रु के रूप में प्रसिद्ध हूँ।

मैंने अपनी इन्हीं भुजाओं के बल से पृथ्वी को कई बार राजाओं से रहित करके उसे ब्राह्मणों को दान में दे दिया था। हे राजकुमार! मेरे इस फरसे को देख, जिससे मैंने सहस्रबाहु अर्थात हजारों लोगों की भुजाओं को काट डाला था।

अरे राजा के बालक लक्ष्मण! तू मुझसे भिड़कर अपने माता — पिता को चिंता में मत डाल अर्थात् अपनी मौत को न बुला। मेरा फरसा गर्भ में पल रहे बच्चों का भी नाश कर डालता है अर्थात मेरे फरसे की गर्जना सुनकर गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो जाता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि परशुराम जी लक्ष्मण जी को समझाने का प्रयास कर रहे हैं कि उन्हें जब क्रोध आता है तो वे किसी बालक को भी मारने से नहीं हिचकिचाते।

**विशेष –**

'लक्ष्मण परशुराम संवाद' की भाषा अवधी है। शब्द चयन सटीक है। दोहा- चौपाई छंद में गेयता मौजूद है। अनुप्रास और उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियां और मुहावरे के प्रयोग से भाषा प्रभावशाली बद पड़ी है।

## काव्यांश-3

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।

पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।

इहाँ कुम्हड़बतिआ कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।

देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।

भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी।।

सुर महिसुर हरिजन अरु गाईं। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।।

बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहू पा परिअ तुम्हारें।।

कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।

जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।

सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर।।

© JCERT not to be republished

**शब्दार्थ –**

| | |
|---|---|
| बिहसि– | हँसकर, |
| मृदु – | कोमल |
| वाणी – | बोली |
| मुनीसु – | महामुनि |
| महाभट – | महान् योद्धा, |
| मानी – | मानना |
| पुनि- पुनि – | बार- बार, |
| कुठारु – | फरसा / कुल्हाड़ी |
| पहारू – | पहाड़, |
| इहाँ – | यहाँ, |
| कुम्हड़बतिआ – | सीताफल / कुम्हड़ा का छोटा फल |
| तरजनी – | अँगूठे के पास की अँगुली, |
| सरासन – | धनुष |
| बाना – | बाण, |
| भृगुसुत – | भृगुवंशी, |
| सहौं – | सहन करना |
| सुर – | देवता, |
| महिसुर – | ब्राह्मण, |
| हरिजन – | ईश्वर भक्त |
| अरु – | और, |
| गाईं – | गाय, |
| सुराई – | वीरता दिखाना |
| बधें – | वध करने से / मारने से, |
| अपकीरति – | अपयश |
| मारतहू – | मार दो, |
| पा – | पैर, |
| परिअ – | पड़ना |
| कोटि – | करोड़, |
| कुलिस – | वज्र / कठोर, |
| कहेउँ – | कह दिया हो, |
| छमहु – | क्षमा करना, |
| धीर – | धैर्यवान |
| सरोष – | क्रोध में भरकर, |
| गिरा – | वाणी |

**प्रसंग –** इस काव्यांश में परशुराम जी के क्रोधित वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी अत्यंत कोमल वाणी में हँसकर उनको प्रत्युत्तर देते हुए कहते हैं कि वे उनको भृगुवंशी समझकर और आपके कंधे पर जनेऊ देखकर अपने क्रोध को सहन कर रहे हैं। उनका तो एक — एक वचन ही करोड़ों वज्रों के समान कठोर है। उन्होंने व्यर्थ में ही फरसा और धनुष धारण किया हुआ है। इन वचनों को सुनकर परशुराम जी और अधिक क्रोधित हो जाते हैं।

**व्याख्या –** परशुराम जी के क्रोध से भरे वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी बहुत ही अधिक कोमल वाणी में हँसकर उनसे बोले कि हे मुनिवर! आप तो अपने आप को बहुत बड़ा योद्धा समझते हैं और बार — बार मुझे अपना फरसा दिखाकर लगता है कि आप फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं। परंतु हे मुनिवर! यहाँ पर कोई भी कुम्हड़े के छोटे फल के समान नहीं हैं, जो तर्जनी उँगली को देखते ही मर जाएँ।

© JCERT not to be republished

मुनि जी! मैंने आपके हाथ में फरसा और धनुष — बाण देखकर ही अभिमानपूर्वक आपसे कुछ कहा था। कहने का तात्पर्य यह है कि एक क्षत्रिय ही दूसरे क्षत्रिय से अभिमान पूर्वक कुछ कह सकता है। जनेऊ से तो आप एक भृगुवंशी ब्राह्मण जान पड़ते हैं इन्हें देखकर ही, जो कुछ भी आपने कहा उसे सहन कर अपने क्रोध को रोक रहा हूँ। हमारे कुल की यह परंपरा है कि हम देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय, इन सभी पर वीरता नहीं दिखाया करते, क्योंकि इन्हें मारने से पाप लगता है और इनसे हार जाने पर अपकीर्ति अथवा अपयश ( बदनामी ) होता है। इसीलिए आप मारें तो भी, हमें आपके पैर पकड़ने चाहिए। हे महामुनि! आपका तो एक — एक वचन ही करोड़ों वज्रों के समान कठोर है। आपने व्यर्थ में ही फरसा और धनुष — बाण धारण किया हुआ है।

आपके धनुष बाण और कुठार (फरसे) को देखकर अगर मैंने कुछ अनुचित कह दिया हो तो हे मुनिवर! आप मुझे क्षमा कीजिए। लक्ष्मण के यह व्यंग्य — वचन सुनकर भृगुवंशी परशुराम क्रोध में आकर गंभीर स्वर में बोलने लगे। .....

**विशेष-**

'लक्ष्मण परशुराम संवाद' की भाषा अवधी है। शब्द चयन सटीक है। तत्सम, तद्भव शब्दों के अतिरिक्त कहीं-कहीं आंचलिक शब्दों का भी प्रयोग किया है दोहा- चौपाई छंद में गेयता मौजूद है। अनुप्रास और उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियां और मुहावरे के प्रयोग से भाषा प्रभावशाली बन पड़ी है।

## काव्यांश-4

कौसिक सुनहु मंद येहु बालकु । कुटिलु कालबस निज कुल घालकु।।

भानुबंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुसु अबुधु असंकू।।

कालकवलु होइहि छन माहीं। कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं।।

तुम्ह हटकहु जौ चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा।।

लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा।।

अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी।।

नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।।

बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा।।

सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।

बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु।।

**शब्दार्थ —**

| | |
|---|---|
| कौसिक - | विश्वामित्र, |
| सुनहु - | सुनिए |
| मंद- | मूर्ख, कुबुद्धि, |
| येहु - | यह, |
| कुटिलु - | दुष्ट |

© JCERT not to be republished

कालबस - मृत्यु के वशीभूत,

घालकु - घातक

भानुबंस - सूर्यवंशी,

राकेस कलंकू - चंद्रमा का कलंक,

निपट - पूरी तरह

निरंकुसु - मनमानी करने वाला

अबुधु - नासमझ,

असंकू - शंकारहित

कालकवलु - काल का ग्रसित / मृत

छन माहीं - क्षण भर में,

खोरि - दोष

हटकहु - मना करने पर उबारा / बचाना

सुजसु - सुयश / सुकीर्ति,

अछत - आपके रहते हुए

बरनै - वर्णन,

पारा - दुसरा,

करनी - काम

बरनी - वर्णन किया,

दुसह - असह्य

बीरब्रती - वीरता का व्रत धारण करने वाला

अछोभा - क्षोभरहित,

गारी - गाली,

सूर - शूरवीर

समर - युद्ध,

कथहिं प्रतापु - प्रताप की डींग मारना

**प्रसंग**-प्रस्तुत चौपाई की पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक क्षितिज भाग–2 में संकलित 'राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद' से उद्धृत है, जिनके कवि महाकवि तुलसीदास हैं।

इन चौपाइयों में लक्ष्मण जी की व्यंग्य भरी बातों को सुन कर परशुराम जी विश्वामित्र जी को उन्हें समझाने को कहते है और साथ ही साथ यह भी कहते हैं कि अगर लक्ष्मण जी चुप नहीं हुए तो इसके परिणाम का दोष उन्हें न दिया जाए। परन्तु लक्ष्मण जी इसके बावजूद भी परशुराम जी पर व्यंग्य कसते जाते हैं।

**व्याख्या —** लक्ष्मण जी की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर परशुराम जी को और क्रोध आ गया और वह विश्वामित्र से बोले कि हे विश्वामित्र! यह बालक (लक्ष्मण) बहुत कुबुद्धि और कुटिल लगता है और यह काल (मृत्यु) के वश में होकर अपने ही कुल का घातक बन रहा है। यह सूर्यवंशी बालक चंद्रमा पर लगे हुए कलंक के समान है। यह बालक मूर्ख, उदंण्ड, निडर है और इसे भविष्य का भान तक नहीं है।

अभी यह क्षणभर में काल का ग्रास हो जाएगा अर्थात् मैं क्षणभर में इसे मार डालूँगा। मैं अभी से यह बात कह रहा हूँ, बाद में मुझे दोष मत दीजिएगा। यदि आप इस बालक को बचाना चाहते हैं, तो इसे मेरे प्रताप, बल और क्रोध के बारे में बता कर अधिक बोलने से मना कर दीजिए।

© JCERT not to be republished

लक्ष्मण जी इतने पर भी नहीं माने और परशुराम को क्रोध दिलाते हुए बोले कि हे मुनिवर! आपका सुयश आपके रहते हुए दूसरा कौन वर्णन कर सकता है ? आप तो अपने ही मुँह से अपनी करनी और अपने विषय में अनेक बार अनेक प्रकार से वर्णन कर चुके हैं। यदि इतना सब कुछ कहने के बाद भी आपको संतोष नहीं हुआ हो, तो कुछ और कह दीजिए। अपने क्रोध को रोककर असह्य दुःख को सहन मत कीजिए। आप वीरता का व्रत धारण करने वाले, धैर्यवान और क्षोभरहित हैं, आपको गाली देना शोभा नहीं देता।

जो शूरवीर होते हैं वे व्यर्थ में अपनी बड़ाई नहीं करते, बल्कि युद्ध भूमि में अपनी वीरता को सिद्ध करते हैं। शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर भी अपने प्रताप की व्यर्थ बातें करने वाला कायर ही हो सकता है। अर्थात युद्ध में अपने शत्रु को सामने देखकर अपनी झूठी प्रशंसा तो कायर करते हैं।

**विशेष -**

'लक्ष्मण परशुराम संवाद' की भाषा अवधि है। शब्द चयन सटीक है। तत्सम, तद्भव के अतिरिक्त आंचलिक भाषा का भी प्रयोग हुआ है। दोहा- चौपाई छंद में गेयता मौजूद है। अनुप्रास, रूपक और उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियां और मुहावरे के प्रयोग से भाषा प्रभावशाली बन पड़ी है।

## काव्यांश-5

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा।।

सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेऊ कर घोरा।।

अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू।।

बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब येहु मरनिहार भा साँचा।।

कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू।।

खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही।।

उतर देत छोड़ौं बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे।।

न त येहि काटि कुठार कठोरे। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे।।

गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।

अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ।।

**शब्दार्थ**

| | |
|---|---|
| कालु - | काल / मृत्यु, |
| हाँक - | आवाज़ लगाना, |
| नु - | जैसे, |
| सुधारि - | सुधार, |
| कर - | हाथ, |
| देइ - | देना, |
| दोसु - | दोष |
| कटुबादी - | कड़वे वचन बोलने वाला, |

© JCERT not to be republished

| | |
|---|---|
| बधजोगू – | मारने योग्य, वध के योग्य, |
| बाँचा – | बचाया |
| मरनिहार – | मरने वाला, |
| साँचा – | सच में ही |
| छमिअ – | क्षमा करना, |
| गनहिं – | गिनना, |
| खर – | दुष्ट |
| अकरुन – | जिसमें दया और करुणा न हो, |
| कोही – | क्रोधी, |
| गुरहि – | गुरु के, |
| उरिन – | ऋण से मुक्त |
| श्रमथोरे – | थोड़े परिश्रम से, |
| गाधिसूनु – | गाधि के पुत्र अर्थात् विश्वामित्र, |
| हरियरे – | हरा ही हरा, |
| अयमय – | लोहे की बनी हुई, |
| खाँड़ – | तलवार, |
| ऊखमय – | गन्ने से बनी हुई, |
| अजहुँ – | अब भी |

**प्रसंग–**प्रस्तुत चौपाई की पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक क्षितिज भाग–2 में संकलित 'राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद' से उद्धृत है, जिनके कवि महाकवि तुलसीदास हैं।

इस चौपाई में तुलसीदास जी वर्णन कर रहे हैं कि जब लक्ष्मण जी परशुराम जी के क्रोध से नहीं डर रहे थे; तो परशुराम जी सभी से कहते हैं कि अभी तक वे लक्ष्मण जी को बालक समझ कर माफ कर रहे थे, परन्तु अब वे और सहन नहीं कर सकते। अब कोई उन्हें दोष न दें। परशुराम जी के ऐसे वचन सुनकर विश्वामित्र जी मन ही मन परशुराम जी का अज्ञानियों की तरह व्यवहार देख कर हँसने लगे।

**व्याख्या –** लक्ष्मण जी परशुराम जी के वचनों को सुनकर उन से बोले कि ऐसा लग रहा है मानो आप तो काल(यमराज) को आवाज लगाकर बार-बार मेरे लिए बुला रहे हो। लक्ष्मण जी के ऐसे कठोर वचन सुनते ही परशुराम जी का क्रोध और बढ़ गया। उन्होंने अपने भयानक फरसे को घुमाकर अपने हाथ में ले लिया और बोले अब मुझे कोई दोष नहीं देना। इतने कड़वे वचन बोलने वाला यह बालक मारे जाने योग्य है। बालक देखकर इसे मैंने बहुत बचाया, लेकिन लगता है कि अब इसकी मृत्यु निकट आ गई है।

परशुराम जी को क्रोधित होते देखकर विश्वामित्र जी बोले हे मुनिवर! आप इसके अपराध को क्षमा कर दीजिए क्योंकि साधु लोग तो बालकों के गुण और दोष की गिनती नहीं करते हैं। तब परशुराम जी ने क्रोधित होते हुए कहा मै दयारहित और क्रोधी हूँ। उस पर यह गुरुद्रोही मेरे सामने उत्तर दे रहा हैं फिर भी मैं इसे बिना मारे छोड़ रहा हूँ। हे

© JCERT not to be republished

विश्वामित्र! सिर्फ तुम्हारे प्रेम के कारण। नहीं तो इसे इस कठोर फरसे से काटकर थोड़े ही परिश्रम से गुरु के ऋण से मुक्त हो जाता।

परशुराम जी के वचन सुनकर विश्वामित्र जी ने मन ही मन में हँसकर सोचा कि ये अब भी राम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं। मुनि अब भी नहीं समझ रहे हैं कि ये दोनों बालक लोहे की बनी हुई तलवार हैं, गन्ने के रस की नहीं, जो मुँह में लेते ही गल जाएँ अर्थात् राम — लक्ष्मण सामान्य वीर न होकर बहुत पराक्रमी योद्धा हैं। परशुराम जी अभी भी इनकी साहस, वीरता व क्षमता से अनभिज्ञ हैं।

**विशेष -**

'लक्ष्मण परशुराम संवाद' की भाषा अवधी है। शब्द चयन सटीक है। तत्सम,तद्भव के अतिरिक्त आंचलिक भाषा का भी प्रयोग हुआ है। ओज गुण है। दोहा- चौपाई छंद में गेयता मौजूद है। अनुप्रास,उत्प्रेक्षा और उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियां और मुहावरे के प्रयोग से भाषा प्रभावशाली बन पड़ी है।

## चौपाई - 6

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहि जान बिदित संसारा।।

माता पितहि उरिन भये नीकें। गुररिनु रहा सोचु बड़ जी कें।।

सो जनु हमरेहि माथें काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढ़ा।।

अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली।।

सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।

भृगुबर परसु देखाबहु मोही। बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही।।

मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े।।

अनुचित कहि सबु लोगु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु नेवारे।।

लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।

बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु।।

**शब्दार्थ —**

| | |
|---|---|
| सीलु - | शील स्वभाव, |
| बिदित - | पता है, |
| उरिन - | ऋणमुक्त, |
| नीकें - | भली प्रकार, |
| गुररिनु - | गुरु का ऋण, |
| हमरेहि - | मेरे ही, |
| ब्यवहरिआ - | हिसाब लगाने वाले को, |
| बिप्र - | ब्राह्मण, |
| सुभट - | बड़े-बड़े योद्धा, |
| द्विजदेवता - | ब्राह्मण, |
| सयनहि - | आँख के इशारे से, |
| नेवारे - | मना किया, |

© JCERT not to be republished

| | |
|---|---|
| कृसानु - | अग्नि |
| रघुकुलभानु — | रघुवंश के सूर्य श्रीरामचंद्र |

**प्रसंग-**प्रस्तुत चौपाई की पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक क्षितिज भाग–2 में संकलित 'राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद' से उद्धृत है, जिनके कवि महाकवि तुलसीदास हैं।

प्रस्तुत चौपाई में तुलसीदास जी वर्णन कर रहे हैं कि जब लक्ष्मण जी किसी भी तरह परशुराम जी के अपमान करने से पीछे नहीं हट रहे थे और परशुराम जी का क्रोध बढ़ता ही जा रहा था,तब श्री राम जी ने लक्ष्मण जी के वचनों के विपरीत शांत वचनों से परशुराम जी से लक्ष्मण जी को क्षमा करने की विनती करने लगे।

**व्याख्या -** परशुराम जी के क्रोध से भरे वचनों को सुन कर लक्ष्मण जी ने परशुराम जी से कहा कि हे मुनिश्रेष्ठ! आपके पराक्रम को कौन नहीं जानता। वह सारे संसार में प्रसिद्ध है। आपने अपने माता पिता का ऋण तो चुका ही दिया हैं और अब अपने गुरु का ऋण चुकाने की सोच रहे हैं। जिसका आपके जी पर बड़ा बोझ है। और अब आप ये बात भी मेरे माथे डालना चाहते हैं। बहुत दिन बीत गये। इसीलिए उस ऋण में ब्याज बहुत बढ़ गया होगा। बेहतर है कि आप किसी हिसाब करने वाले को बुला लीजिए। मैं आपका ऋण चुकाने के लिए तुरंत थैली खोल दूंगा। लक्ष्मण जी के कडुवे वचन सुनकर परशुराम जी ने अपना फरसा उठाया और लक्ष्मण जी पर आघात करने को दौड़ पड़े। सारी सभा हाय — हाय पुकारने लगी। इस पर लक्ष्मण जी बोले हे मुनिश्रेष्ठ! आप मुझे बार बार फरसा दिखा रहे हैं। हे क्षत्रिय राजाओं के शत्रु! मैं आपको ब्राह्मण समझ कर बार — बार बचा रहा हूँ। मुझे लगता है आपको कभी युद्ध के मैदान में वीर योद्धा नहीं मिले हैं। हे ब्राह्मण देवता! आप घर में ही अपनी वीरता के कारण फूले — फूले फिर रहे हैं अर्थात् अत्यधिक खुश हो रहे हैं। लक्ष्मण जी के ऐसे वचन सुनकर सभा में उपस्थित सभी लोग यह अनुचित है, यह अनुचित है ' कहकर पुकारने लगे। यह देखकर श्री राम जी ने लक्ष्मण जी को आँखों के इशारे से रोक दिया।

लक्ष्मण जी के उत्तर परशुराम जी की क्रोधाग्नि में आहुति के सदृश कार्य कर रहे थे। इस क्रोधाग्नि को बढ़ते देख रघुवंशी सूर्य राम, लक्ष्मण जी के वचनों के विपरीत, जल के समान शांत करने वाले वचनों का प्रयोग करते हुए परशुराम जी से लक्ष्मण को क्षमा करने की विनती करने लगे। जब श्री राम ने देखा कि परशुराम जी का क्रोध अत्यधिक बढ़ चुका है। अग्नि को शांत करने के लिए जैसे जल की आवश्यकता होती हैं। वैसे ही क्रोध रूपी अग्नि को शांत करने के लिए मीठे वचनों की आवश्यकता होती हैं। श्री राम ने भी वही किया। श्री राम ने अपने मीठे वचनों से परशुराम जी का क्रोध शांत करने का प्रयास करने लगे।

**विशेष -**

'राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद' की भाषा अवधी है। शब्द चयन सटीक है। तत्सम,तद्भव के अतिरिक्त आंचलिक भाषा का भी प्रयोग

© JCERT not to be republished

हुआ है। दोहा- चौपाई छंद में गेयता मौजूद है। अनुप्रास,उत्प्रेक्षा और उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियां और मुहावरे के प्रयोग से भाषा प्रभावशाली बन पड़ी है।

# अभ्यास

**प्रश्न 1 — परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन — कौन से तर्क दिए ?**

उत्तर — परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए तर्क देते हुए कहा कि आप किसलिए इतना क्रोध कर रहे हैं। इस धनुष से आपकी इतनी ममता क्यों है। श्री राम ने इसे केवल छुआ था और उनके छूते ही धनुष खुद टूट गया। ऐसे कई धनुष तो हमने बचपन में तोडें है और किसी ने हम पर क्रोध नहीं किया।

**प्रश्न 2 — परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर — परशुराम जी के क्रोध करने पर श्री राम ने बहुत ही शांत बुद्धि से काम लिया। उन्होंने बहुत ही नम्रता से शांत व मधुर वचनों का सहारा लेकर परशुराम जी के क्रोध को शांत करने का प्रयास किया। परशुराम जी बहुत क्रोध में थे जिसके कारण श्री राम ने खुद को उनका सेवक बताया व उनसे निवेदन किया कि वह उनको किसी भी प्रकार की आज्ञा दे। उनकी भाषा बेहद आदर सत्कार वाली थी, वह जानते थे कि परशुराम जी बहुत क्रोधित हैं; जिसके कारण उन्होने अपनी मीठी वाणी से वातावरण में कोमलता बनाए रखने का प्रयास किया।

परशुराम जी की तरह लक्ष्मण जी भी क्रोधित व्यवहार के माने जाते हैं। निडरता उनके स्वभाम में कूट — कूट के भरी हुई है। लक्ष्मण जी परशुराम जी के पास अपने वचनों का सहारा ले कर अपनी बात बहुत अच्छी तरह उनके सामने प्रस्तुत करते हैं और वह इस बात की परवाह भी नहीं करते कि परशुराम जी उनसे क्रोधित हो सकते हैं। वह परशुराम जी के क्रोध को न्याय के बराबर नहीं मानते इसलिए वह परशुराम जी के विरोध में खड़े हो जाते हैं। यहाँ श्री राम बहुत ही शांत स्वभाव, बुद्धिमानी, धैर्यवान, मृदुभाषी व्यक्ति है दूसरी और लक्ष्मण जी निडर, साहसी, क्रोधी व अन्याय विरोधी स्वभाव के माने जाते हैं।

**प्रश्न 3 — लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।**

उत्तर– लक्ष्मण और परशुराम संवाद के जो अंश मुझे सबसे अच्छे लगे वे निम्नलिखित हैं।

लक्ष्मण — हे मुनि! बचपन में हमने खेल — खेल में ऐसे बहुत से धनुष तोड़े हैं, तब तो आप कभी क्रोधित नहीं हुए थे। फिर इस धनुष के टूटने पर इतना क्रोध क्यों कर रहे हैं ?

© JCERT not to be republished

परशुराम — अरे राजा के पुत्र! मृत्यु के वश में होने से तुझे यह भी होश नहीं कि तू क्या बोल रहा है ? तू सँभल कर नहीं बोल पा रहा है। समस्त विश्व में विख्यात भगवान शिव का यह धनुष क्या तुझे बचपन में तोड़े हुए धनुषों के समान ही दिखाई देता है ?

**प्रश्न 4 — परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या — क्या कहा, निम्न पद्यांश के आधार पर लिखिए।**

बाल ब्रह्मचारी अति कोही बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही॥

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।

सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥

मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।

गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥

उत्तर — परशुराम ने अपने बारे में कहा कि मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति हूँ। मैं पूरे विश्व में क्षत्रिय कुल के घोर शत्रु के रूप में प्रसिद्ध हूँ।

मैंने अपनी इन्हीं भुजाओं के बल से पृथ्वी को कई बार राजाओं से रहित करके उसे ब्राह्मणों को दान में दे दिया था। हे राजकुमार! मेरे इस फरसे को देख, जिससे मैंने सहस्रबाहु अर्थात हजारों लोगों की भुजाओं को काट डाला था। अरे राजा के बालक लक्ष्मण! तू मुझसे भिड़कर अपने माता — पिता को चिंता में मत डाल अर्थात अपनी मौत को न बुला। मेरा फरसा बहुत भयंकर है। यह गर्भ में पल रहे बच्चों का भी नाश कर डालता है अर्थात मेरे फरसे की गर्जना सुनकर गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि परशुराम जी अपने विषय में बता कर लक्ष्मण जी को समझाने का प्रयास कर रहे हैं कि उन्हें जब क्रोध आता है तो वे किसी बालक को भी मारने से नहीं हिचकिचाते।

**प्रश्न 5 — लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या — क्या विशेषताएँ बताईं ?**

उत्तर — लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएं बताई है —

1. वीर पुरुष अपनी महानता का गुणगान खुद नहीं करते।
2. युद्धभूमि में शूरवीर युद्ध करते हैं न की अपने प्रताप का गुणगान करते हैं।
3. स्वयं किए गए प्रसिद्ध कार्यों पर कभी अभिमान नहीं करते।
4. वीर पुरुष किसी के खिलाफ गलत शब्दों का प्रयोग नहीं करते।
5. वह अन्याय के विरुद्ध हमेशा खड़े रहते हैं।
6. वीर योद्धा शांत, विनम्र, और साहसी हृदय के होते हैं।

**प्रश्न 6 — साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।**

उत्तर — यह पूर्णतया सत्य है कि व्यक्ति को जीवन में आगे बढ़ने के लिए साहस व् शक्ति

© JCERT not to be republished

की आवश्यकता होती है। लेकिन अगर व्यक्ति के अंदर साहस और शक्ति के साथ — साथ विनम्रता भी हो तो वह व्यक्ति कभी किसी परिस्थिति में हार नहीं मानेगा और हारेगा भी नहीं। विनम्रता के अभाव में व्यक्ति उद्दंड हो जाता है। वह अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हुए दूसरों का अहित करने लगता है। विनम्रता हमें दुसरों का आदर — सम्मान करना सिखाती है। प्रभु श्री राम जी इसका जीता-जागता उदाहरण है। 'राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद' कविता के आधार पर देखें, तो लक्ष्मण जी साहसी और शक्तिशाली तो थे, लेकिन उनमें विनम्रता का अभाव था; वहीं श्री राम साहसी व शक्तिशाली होने के साथ ही विनम्र भी थे। इसीलिए उन्होंने धैर्य के साथ परशुराम जी को अपनी बात समझाई और क्षमा मांगी, जिससे बात ज्यादा नहीं बिगड़ी और परशुराम जी शांत हो गए।

**प्रश्न 7 — भाव स्पष्ट कीजिए —**

(क) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी॥

पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन पूँकि पहारू।

उत्तर- **प्रसंग-** प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक क्षितिज भाग–2 में संकलित 'राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद' से ली गई है, जिसके रचनाकार महाकवि तुलसीदास हैं।

भावार्थ — उपयुक्त पंक्तियो का भाव यह है की लक्ष्मण जी मुस्कुराते हुए मधुर वाणी से परशुराम जी पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि हे मुनि! आप अपने अभिमान के वश में हैं। आप अपने आप को इस पूरे संसार का एक मात्र योद्धा मान रहे हैं। किन्तु आप मुझे बार — बार अपना फरसा दिखा कर डरने की कोशिश कर रहे हैं। आपको देख कर ऐसा लगता है कि आप पहाड़ को अपनी एक फूंक से ही उड़ाना चाहते हैं अर्थात जैसे की एक ही फूंक में आप एक पहाड़ को नहीं हिला सकते उसी प्रकार आप मुझे एक बच्चा न समझे। मैं बच्चों की तरह आपके फरसे से डरने वालो में से नहीं हूँ।

(ख) इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥

देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥

उत्तर— **प्रसंग-** प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक क्षितिज भाग–2 में संकलित 'राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद' से ली गई है, जिसके रचनाकार महाकवि तुलसीदास हैं।

भावार्थ — उपयुक्त पंक्तियो का भाव यह है कि लक्ष्मण जी वीरता और साहस का परिचय देते हुए परशुराम जी से कहते हैं कि हम भी कोई कुम्हड़बतिया अर्थात् दुर्बल नहीं हैं जो किसी की भी तर्जनी देखकर मुरझा जाए। मैंने फरसे और धनुष — बाण को अच्छी तरह से देख लिया है इसलिए मैं ये सब आप से अभिमान सहित ही बोल रहा हूँ अर्थात हम कोई एक कोमल फल नहीं है जो हाथ लगाने भर से टूट जाएँ। हम बालक जरूर हैं लेकिन फरसे और धनुष — बाण भी बहुत देखे हैं इसलिए हमें नादान बालक न समझे।

© JCERT not to be republished

(ग) गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।

अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ।।

उत्तर— **प्रसंग-** प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक क्षितिज भाग–2 में संकलित 'राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद' से ली गई है, जिसके रचनाकार महाकवि तुलसीदास हैं।

**भावार्थ -** भाव यह है कि विश्वामित्र अपने मन — ही — मन में मुस्कुराते हुए परशुराम जी की बुद्धि पर तरस खाते हुए मन — ही — मन में कहते हैं कि परशुराम जी को चारों ओर हरा — ही — हरा दिखाई दे रहा है अर्थात चारों ओर विजयी होने के कारण ये राम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं। वह दशरथ पुत्रों को ( राम व् लक्ष्मण ) साधारण क्षत्रिय बालकों की तरह ही मान रहे हैं जिन्हें वह गन्ने की खांड समझ रहे हैं। वह तो लोहे से बनी तलवार हैं। इस समय परशुराम जी की स्थिति सावन के अंधे की भांति हो गयी है जिसे चारो ओर हरा — ही — हरा दिखाई पड़ रहा है अर्थात इनकी समझ क्रोध व् अन्धकार से घिरी हुई है।

## प्रश्न 8 — पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर- हमारी पाठ्य–पुस्तक में संकलित काव्यांश 'राम-लक्ष्मण–परशुराम सं. वाद' 'रामचरितमानस' के बालकाण्ड से लिया गया। अवधी भाषा में लिखा है। तुलसीदास की भाषा सरल, सरस, सहज और अत्यंत लोकप्रिय भाषा है। इसमें तुलसीदास ने इसमें दोहे, छंद व् चौपाई का बेहद ही अद्भुत प्रकार से प्रयोग किया है। इसमें चौपाई छंदों के प्रयोग से गेयता और संगीतात्मकता बढ़ गई है। जिसके कारण काव्य के सौन्दर्य तथा आनंद में वृद्धि आई है। उन्हें अवधी और ब्रजे दोनों भाषाओं पर समान अधिकार है। तुलसीदास के काव्य में वीर रस एवं हास्य रस की सहज अभिव्यक्ति हुई है। जैसे —

बालकु बोलि बधौं नहि तोहीं। केवल मुनिजड़ जानहि मोही।।

इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाही। जे तरजनी देखि मर जाही।।

तुलसीदास जी रस सिद्ध और अलंकारप्रिय कवि हैं। तुलसीदास ने इन चौपाइयों में अलंकारों का प्रयोग कर इसे और भी सुंदर बना दिया है। इसकी भाषा में अनुप्रास अलंकार, रूपक अलंकार, उत्प्रेक्षा अलंकार व् पुनरुक्ति अलंकार की अधिकता पाई जाती है। जैसे-

**अनुप्रास —** बालकु बोलि बधौं नहिं तोही।

**उपमा —** कोटि कुलिस सम वचन तुम्हारा।

**रूपक —** भानुवंश राकेश कलंकू। निपट निरंकुश अबुध अशंकू।।

**उत्प्रेक्षा —** तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा।।

**वक्रोक्ति —** अहो मुनीसु महाभट मानी।

**यमक —** अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहु न बूझ, अबूझ

**पुनरुक्ति प्रकाश —** पुनि-पुनि मोह देखाव कुठारू।

© JCERT not to be republished

**प्रश्न 9 — इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर— तुलसीदास द्वारा रचित 'राम-लक्ष्मण–परशुराम संवाद' द मूल रूप से व्यंग्य काव्य है उदाहरण के लिए —

**(क) बहु धनुही तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस किन्हि गोसाईँ॥**

**येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥**

इन पंक्तियों में लक्ष्मण जी परशुराम जी से धनुष के तोड़ने का व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि हमने अपने बचपन में ऐसे कई धनुषों को तोड़ा है तब तो अपने हम पर कभी क्रोध व्यक्त नहीं किया। तो आज इस धनुष पर आपको इतनी ममता क्यों आ रही है।

**(ख) मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।**

**गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर॥**

इन पंक्तियों में परशुराम जी क्रोध में लक्ष्मण जी से कहते हैं कि अरे राजा के बालक! तू अपने माता — पिता को सोच में मत डाल। अर्थात अपनी मृत्यु को बुलावा न भेज। मेरा फरसा बड़ा ही भयानक है। यह गर्भ में जीने वाले बच्चो को भी मार सकता है।

**(ग) गाधिसूनु कह हृदय हसी मुनिहि हरियरे सूझ।**

**अयमय खांड न ऊखमय अजहुँ न बुझ अबूझ॥**

इन पंक्तियों में विश्वामित्र जी परशुराम जी की बुद्धि पर मन — ही — मन कहते है कि परशुराम जी राम, लक्ष्मण को साधारण बालक समझ रहे हैं। उनको तो चारो ओर से हरा — ही — हरा सूझ रहा है। जो लोहे की तलवार को गन्ने की खांड से तोल रहे है इस समय परशुराम जी की स्थिति सावन के अंधे जैसी हो चुकी है।

**प्रश्न 10 — निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचानकर लिखिए —**

**(क) बालकु बोलि बधौं नहि तोही।**

उत्तर- 'ब' वर्ण की आवृत्ति के कारण — अनुप्रास अलंकार।

**(ख) कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा।**

उत्तर- उक्त पंक्ति में 'क' वर्ण का बार-बार प्रयोग हुआ है — अनुप्रास अलंकार।

कोटि कुलिस सम बचनु में उपमा अलंकार भी है।

**(ग) तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा॥**

**बार बार मोहि लागि बोलावा ॥**

उत्तर- 'काल हाँक जनु लावा' में उत्प्रेक्षा अलंकार है क्योंकि यहां जनु उत्प्रेक्षा का वाचक शब्द है।

'बार-बार' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है क्योंकि एक ही शब्द को दो बार लिखा है।

**(घ) लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।**

**बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु॥**

उत्तर— उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु

© JCERT not to be republished

कृसानु में उपमा अलंकार है।

जल सम बचन में भी उपमा अलंकार है क्योंकि यहां एक से दूसरे की समानता बताई है।

रघुकुलभानु में रुपक अलंकार है, यहाँ श्री राम के गुणों की समानता सूर्य से की गई है।

भृगुवर कोप कृसानु में भी रूपक अलंकार है।

## अन्य परीक्षापयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न

**प्रश्न 1. धनुष टूटने से क्रोधित परशुराम ने राम से क्या कहा?**

उत्तर– धनुष टूटने से क्रोधित परशुराम ने राम से कहा कि सेवक वह है जो सेवा का कार्य करें शत्रुता का कार्य करके वैर ही मोल लिया जाता है।

**प्रश्न 2. 'न तो मारै जैहहिं सब राजा' परशु. राम के मुंह सेऐसा सुनकर लक्ष्मण की क्या प्रतिक्रिया रही?**

उत्तर– सारे राजाओं के मारे जाने की बात सुनकर लक्ष्मण मुस्कुराने लगे। उन्होंने परशुराम से व्यंग्य के स्वर में कहा कि बचपन में मैंने बहुत सी धनुहियाँ तोड़ी थी तब तो आपनेऐसा क्रोध कभी नहीं किया।

**प्रश्न 3. परशुराम के अनुसार लक्ष्मण क्या भूल कर रहे थे? उनकी भूल का परशुराम ने क्या कारण बताया?**

उत्तर– परशुराम के अनुसार लक्ष्मण संसार के सभी धनुष कोएक समान समझने की भूल कर रहे थे जबकि शिवजी का यह धनुष सारे संसार में प्रसिद्ध है। लक्ष्मण की इस भूल का कारण परशुराम यह मानते हैं कि लक्ष्मण काल के वश में होने सेऐसा कह रहा है।

**प्रश्न 4. धनुष टूटने पर लक्ष्मण किन कारणों के आधार पर राम को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे?**

उत्तर– धनुष टूट जाने पर लक्ष्मण इसका जिम्मेदार राम को नहीं मान रहे थे। उनका मानना था कि धनुष बहुत पुराना और कमजोर था जो राम के छूते ही टूट गया। राम ने तो इसे नया समझकर उठाया था। ऐसा पुराना धनुष टूटने से हमारा क्या लाभ। इन तर्कों द्वारा वे परशुराम के समक्ष राम को निर्दोष सिद्ध कर रहे थे।

**प्रश्न 5. परशुराम ने अपनी कौन–कौन सी विशेषताओं द्वारा लक्ष्मण को डराने का प्रयास किया?**

उत्तर– परशुराम ने लक्ष्मण के मन में भय उत्पन्न करने के लिए अपनी निम्नलिखित विशेषताएँ बताई।

1. लक्ष्मण को सठ कहकर चेताया कि तूने अभी मेरे स्वभाव के बारे में नहीं सुना।
2. मैं तुझे बालक समझकर नहीं मार रहा हूं।
3. तुम मुझे मूर्ख मुनि समझने की भूल कर रहा है।

© JCERT not to be republished

4. मैं बाल ब्रह्मचारी और क्षत्रियों का नाश करने वाला हूं।
5. मैंने अनेक बार इस पृथ्वी को जीत कर ब्राह्मणों को दे दिया।

**प्रश्न 6. परशुराम को अपने फरसे पर इतना घमंड क्यों था?**

उत्तर– परशुराम को अपने फरसे पर इतना घमंड इसलिए था क्योंकि–

1. इसी फरसे के बल पर उन्होंने सहस्रबाहु को हराया था।
2. उनका फरसा अत्यंत भयंकर और कठोर है।
3. यह फरसा गर्भ में पल रहे बच्चों का भी वध कर डालता है।
4. यह फरसा परशुराम का प्रिय हथियार था।

**प्रश्न 7. लक्ष्मण ने क्या–क्या कहकर परशुराम पर व्यंग्य किया?**

उत्तर– लक्ष्मण ने परशुराम से कहा कि हे मुनि श्रेष्ठ आप तो महान योद्धा हैं जो बार–बार अपने कुल्हाड़ी को दिखाकर फूंक मारकर पहाड़ उड़ा देना चाहते हैं। आपके सामने जो भी है उनमें से कोई भी कुम्हड़े की बतिया के जैसे कमजोर नहीं है जो आपके इशारे मात्र से भयभीत हो जाएगा।

**प्रश्न 8. लक्ष्मण अपने कुल की किस परंपरा का हवाला देकर युद्ध करने से बच रहे थे?**

उत्तर– लक्ष्मण ने परशुराम से कहा कि मैं आपसे भयभीत नहीं हूं। हमारे कुल की यह परंपरा है कि देवता, ब्राह्मण, ईश्वर, भक्त और गाय के साथ वीरता का प्रदर्शन नहीं किया जाता। इनकी हत्या करने पर पाप का भागीदार बनना पड़ता है और इनसे हारने पर अपयश मिलता है।

**प्रश्न 9. लक्ष्मण के वाक् चातुर्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**

उत्तर– परशुराम से लक्ष्मण अपने वाक् चातुर्य का तरह–तरह से परिचय देते हैं। वहऐसे सूक्ति बाण चलाते हैं कि परशुराम का क्रोध भड़क उठता है। वह फिर कोमल शब्दों के सहारे गंभीरता से बात करने के लिए विवश हो जाते हैं।

**प्रश्न 10. परशुराम विश्वामित्र से लक्ष्मण की शिकायत किस तरह करते हैं?**

उत्तर– परशुराम लक्ष्मण की शिकायत करते हुए विश्वामित्र से कहते हैं कि–

1. यह बालक बड़ा ही कुबुध्दि है।
2. यह कुटिलएवं काल के वशीभूत होकर अपने ही कुल का नाश करने वाला है।
3. यह सूर्यवंश रूपी चंद्रमा पर कलंक है।
4. यह पूरी तरह उद्दंड, निडर और मूर्ख है।

**प्रश्न 11. लक्ष्मण ने परशुराम और उनके सुयश पर किस तरह व्यंग्य किया?**

उत्तर– लक्ष्मण ने परशुराम और उनके सुयश पर व्यंग्य करते हुए कहा कि आपके

© JCERT not to be republished

सुयश का वर्णन आपके अलावा दूसरा कोई नहीं कर सकता है। आपने अपने मुंह से अपनी बड़ाई बार–बार कर चुके हैं। इतने पर भी संतोष न हुआ हो तो फिर से कुछ कह डालिए।

**प्रश्न 12. लक्ष्मण और श्रीराम के वचनों में मुख्य अंतर क्या था?**

उत्तर– लक्ष्मण और श्रीराम के वचनों में मुख्य अंतर यह था कि लक्ष्मण के वचनों में उद्दंडता, व्यंग्यात्मक तथा उग्रता का मेल था। इसके विपरीत श्रीराम के वचनों में विनम्रता और विनयशीलता का भाव था, जो शीतल जल के समान प्रभावकारी था जिससे परशुराम की क्रोधाग्नि शांत हो गई।

**प्रश्न 13. राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद पाठ में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर– 'राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद' नामक पाठ में निहित संदेश यह है कि हमें क्रोध करने से बचना चाहिए। यह हमारे बुद्धि, विवेक का नाश कर देता है। हमें सदैव विनम्र, शांतएवं कोमल व्यवहार करना चाहिए।

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**प्रश्न 1. परशुराम के क्रोध करने पर किसने धनुष के टूट जाने के लिए तर्क दिए?**

(a) राम

(b) लक्ष्मण

(c) केवल (ख)

(d) (क) और (ख) दोनों।

उत्तर— (b) लक्ष्मण

**प्रश्न 2. वीर योद्धा की विशेषताएं किसने बताई?**

(a) लक्ष्मण (b) राम

(c) भरत (d) शत्रुघ्न

उत्तर— (a) लक्ष्मण

**प्रश्न 3. साहस और शक्ति के साथ क्या होना बेहतर है?**

(a) दिमाग (ख) क्षमता

(c) विनम्रता (घ) लक्ष्य।

उत्तर—(c) विनम्रता

**प्रश्न 4. बालकु बोलि बंधो नहि तोही। इसमें कौन— सा अलंकार है?**

(a) उपमा अलंकार

(b) अनुप्रास अलंकार

(c) उत्प्रेक्षा अलंकार

(d) उपमा एवं अनुप्रास अलंकार।

उत्तर— (b) अनुप्रास अलंकार

**प्रश्न 5. कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। अलंकार पहचान कर बताइए?**

(a) उपमा और अनुप्रास अलंकार

(b) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

(c) उत्प्रेक्षा अलंकार

(d) अनुप्रास अलंकार।

उत्तर— (a) उपमा और अनुप्रास

© JCERT not to be republished

**प्रश्न 6. तुम्ह तौ कालु हांक जनु लावा।।**

बार बार मोहि लागि बोलावा।।

अलंकार बताओ?

(a) उत्प्रेक्षा अलंकार

(b) अनुप्रास अलंकार

(c) उत्प्रेक्षा, अनुप्रास एवं पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

(d) उपमा अलंकार।

उत्तर—(c) उत्प्रेक्षा, अनुप्रास एवं पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।

**प्रश्न 7. लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु।**

बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु।।

(a) उपमा एवं अनुप्रास अलंकार

(b) उत्प्रेक्षा अलंकार

(c) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

(d) उपमा अलंकार।

उत्तर— (क) उपमा एवं अनुप्रास अलंकार

**प्रश्न 8. संभुधन का शब्दार्थ इनमें से कौन — सा है?**

(a) भंग करने वाला

(b)शिव का धनुष

(c) शत्रु

(d) क्रोध।

उत्तर— (b) शिव का धनुष

**प्रश्न 9. तुलसीदास के आराध्य देव कौन थे?**

(a) श्री कृष्ण

(b) शिव

(c) दशरथ— सूत श्रीराम

(d) निर्गुण ईश्वर।

उत्तर— (c) दशरथ— सूत श्रीराम

**प्रश्न 10. 'हे नाथ! शिव— धनुष को तोड़ने वाला तुम्हारा ही कोई दास होगा।" यह शब्द किसने किसको कहा है?**

(a) जनक ने परशुराम को

(b) राम ने परशुराम को

(c) लक्ष्मण ने राम को

(d) हनुमान ने जनक को।

उत्तर— (b) राम ने परशुराम को

**प्रश्न 11. परशुराम को क्या देखकर गुस्सा आता है?**

(a) टूटे हुए शिव के धनुष को देखकर

(b) श्री राम को देखकर

(c) सीता जी को देखकर

(d) स्वयंवर— आयोजन को देखकर।

उत्तर—(a) टूटे हुए शिव के धनुष को देखकर

**प्रश्न 12. परशुराम ने सेवक किसे कहा है?**

(a) जो सम्मान करे

(b) जो आज्ञा का पालन करे

(c) जो सेवा करे

(d) जो कुछ भी न करे।

उत्तर— (c) जो सेवा करे।

© JCERT not to be republished

**प्रश्न 13. किसने स्वयंवर में पहुंचकर सबको धमकी दी थी?**

(a) शिवजी ने (b) लक्ष्मण ने

(c) श्री राम ने (d) परशुराम ने।

उत्तर—(d) परशुराम ने।

**प्रश्न 14. सहस्रबाहु कौन था?**

(a) ब्राह्मण (b) देवता

(c) राक्षस (d) किसान।

उत्तर—(c) राक्षस

**प्रश्न 15. तुलसीदास ने ' भृगुकुल के ध्वज ' किसे कहा है?**

(a) राजा जनक को

(b)श्री राम को

(c) रावण को

(d) परशुराम को।

उत्तर— (घ)परशुराम को

**प्रश्न 16. परशुराम के क्रोध को किसने शांत करने का प्रयास किया था?**

(a) श्रीराम ने (b) राजा जनक ने

(c) लक्ष्मण ने (d) विश्वामित्र।

उत्तर— (a) श्रीराम ने

**प्रश्न 17. लक्ष्मण ने सभी धनुष को कैसा बताया है?**

(a) नया (b) समान

(c) पुराना (d) अच्छा।

उत्तर—(b) समान

**प्रश्न 18. परशुराम लक्ष्मण का वध क्या समझकर नहीं करते हैं?**

(a) बालक (b) ब्राह्मण

(c) राजकुमार (d) कायर।

उत्तर—(a) बालक

**प्रश्न 19. परशुराम अपने— आपको किस कुल का द्रोही (दुश्मन) कहते हैं?**

(a) ब्राह्मण (b) वैश्य

(c) शुद्ध (d) क्षत्रिय।

उत्तर—(d) क्षत्रिय

**प्रश्न 20. देवता, ब्राह्मण, भक्त और गाय पर किस कुल में वीरता नहीं दिखाई जाती थी?**

(a) चौहानकुल में (b) रघुकुल में

(c) आर्यकुल में (d) भृगकुल में।

उत्तर—(b) रघुकुल में

**प्रश्न 21. परशुराम ने ' सूर्यवंश का कलंक ' किसे कहा है?**

(a) लक्ष्मण को (b) सीता को

(c) विश्वामित्र को (d) श्रीराम को।

उत्तर—(a) लक्ष्मण को

**प्रश्न 22. 'अहो मुनिसु महाभट मानी' शब्द किसने कहे हैं?**

(a) राजा जनक ने (b) विश्वामित्र ने

(c) लक्ष्मण ने (d) श्रीराम ने।

उत्तर—(c) लक्ष्मण ने

© JCERT not to be republished

**प्रश्न 23. श्रीराम ने किस के धनुष को तोड़ा था?**

(a) परशुराम के (b) शिव के

(c) ब्रह्मा के (d) विष्णु के।

उत्तर— (b) शिव के

**प्रश्न 24. किसके वचन ' कोटि कुलिस ' के समान है?**

(a) राजा जनक के (b) परशुराम के

(c) श्रीराम के (d) सीता के।

उत्तर—(b) परशुराम के

**प्रश्न 25. परशुराम ने मंदबुद्धि बालक किसे कहा है?**

(a) श्रीराम को (b) लक्ष्मण को

(c) शत्रुघ्न को (d) भरत को।

उत्तर—(b) लक्ष्मण को

**प्रश्न 26. युद्ध — क्षेत्र में शत्रु को देखकर कौन अपनी प्रशंसा करता है?**

(a) कायर (b) वीर

(c) निडर (d) कमजोर।

उत्तर—(a) कायर

**प्रश्न 27. परशुराम ने ' गुरु— द्रोही ' किसे कहा है?**

(a) श्रीराम को (b) राजा जनक को

(c) लक्ष्मण को (d) रावण को।

उत्तर—(c) लक्ष्मण को

**प्रश्न 28. 'कटुवादी ' का अर्थ है?**

(a) कर्कश बोलने वाला

(b) मीठा बोलने वाला

(c) कुछ न बोलने वाला

(d) कटु बोलने वाला।

उत्तर—(d) कटु बोलने वाला।

**प्रश्न 29. लक्ष्मण ने परशुराम के किस स्वभाव पर व्यंग किया है?**

(a) चाटुकारिता (b) बड़बोलापन

(c) आलसीपन (d) मधुर।

उत्तर—(b) बड़बोलापन

**प्रश्न 30. कोशिक शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है?**

(a) विश्वामित्र के लिए

(b) परशुराम के लिए

(c) लक्ष्मण के लिए

(d) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर—(a) विश्वामित्र के लिए

**प्रश्न 31. किसने अपने—आपको परशुराम जी का दास बताया है?**

(a) राम ने (b) लक्ष्मण ने

(c) देवता ने (d) ब्राह्मण ने

उत्तर—(b) लक्ष्मण ने

**प्रश्न 32. परशुराम के क्रोध को किसने शांत करने का प्रयास किया था?**

(a) राम (b) लक्ष्मण

(c) परशुराम (d) भरत

उत्तर— (a) राम

© JCERT not to be republished

**प्रश्न 33. 'भृगुकुलकेतु' किसे कहा गया है?**

(a) राज्यसभा को (b) परशुराम को

(c) ब्राह्मण को (d) सभी

उत्तर—(b) परशुराम को

**प्रश्न 34. देवता, ब्राह्मण, भक्त और गाय पर किस कुल में वीरता नहीं दिखाई जाती थी?**

(a) रघुकुल (b) व्याकुल

(c) दोनों (d) कोई भी नहीं

उत्तर—(a) रघुकुल

**प्रश्न 35. लक्ष्मण को शांत रहने के लिए किसने कहा?**

(a) परशुराम ने

(b) राम और परशुराम दोनों ने

(c) केवल राम ने

(d) किसी ने नहीं

उत्तर—(c) केवल राम ने

**प्रश्न 36. लक्ष्मण ने ऋण चुकाने के लिए परशुराम से किसे बुलाने के लिए कहा?**

(a) गुरु (b) देवता

(c) ब्राह्मण (d) उपरोक्त सभी

उत्तर—(a) गुरु

**प्रश्न 37.परशुराम ने किसके कहने पर लक्ष्मण का वध नहीं किया?**

(a) राम (b) विश्वामित्र

(c) सभा (d) उपरोक्त सभी

उत्तर—(b) विश्वामित्र

**प्रश्न 38. परशुराम को नाथ कहकर किसने संबोधित किया?**

(a) लक्ष्मण ने (b) विश्वामित्र ने

(c) दोनों ने (d) श्रीराम ने

उत्तर—(d) श्रीराम ने

© JCERT not to be republished